विशेषताएं —

इनकी सीखने की गति धीमी होती है
इनकी बुद्धि (I.Q.) 80 से 90 के बीच होती है
अपनी और निचली कक्षा का कार्य करने में असमर्थ होते हैं।
मानसिक रूप से अस्वस्थ एवं असमायोजित होते हैं।

पिछड़े पन का कारण —

* शैक्षिक क्षमता में कमी

बालकों के पिछड़े पन का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्रम के अनुसार शैक्षिक क्षमता की कमी या बिल्कुल न होना, बौद्धिक क्षमता के अभाव के कारण वे सामान्य या औसत बुद्धि के बालकों के लिए बनाये गये पाठ्यक्रम को समझ नहीं पाते और परिणाम स्वरूप पिछड़ जाते हैं।

* वातावरण का प्रभाव —

वाटसन ने बताया था कि बच्चों के जीवन में वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है यदि बालक का घरेलू वातावरण एवं विद्यालयी वातावरण उत्साहवर्धक नहीं होता है तो इससे बालकों की शैक्षिक वास्तविक आयु के अनुकूल नहीं बढ़ पाती है और बालक शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं प्रायः यह पाया गया है कि गरीब माता-पिता बालकों की जरूरत के अनुसार कापी, किताब, पेन्सिल, कलम आदि शिक्षण सामाग्री नहीं खरीद पाते जिससे बालक की शैक्षिक अभिरुचि घटने लगती है।

शारीरिक दोष — शारीरिक दोष के कारण भी बालक शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं। अंधे, बहरे, गूंगे बालकों के पिछड़े पन का मूल कारण उनकी शारीरिक विकलांगता है अपनी शारीरिक दोष के कारण ऐसे बालकों की अभिरुचि शिक्षा के प्रति कम होने लगती है।

कर्तव्यत्यागिता
स्वभाव सम्बंधी दोष
शारीरिक रोग
माता-पिता का दृष्टिकोण

पिछड़े बालक
Backward children

पिछड़े बालक, समस्यात्मक बालक, अपराधी बालक से भिन्न होते हैं अतः ये सभी बालक विशिष्ट श्रेणी के बालक होते हैं। पिछड़े बालक के लिए मन्द बुद्धि होना जरूरी नहीं है यदि प्रतिभाशाली/सामान्य बालक अपनी आयु के बालकों से कम शैक्षिक प्रगति करता है तो वह भी पिछड़ा बालक कहा जायेगा। पिछड़े बालक से तात्पर्य ऐसे बालक से होता है जो बुद्धि, शिक्षा आदि में समकक्षियों से काफी पिछड़े रहते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रकार के बालकों को दो रूपों में (1) बुद्धि के आधार तथा (2) शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर बांटा है। बुद्धि के आधार पर पिछड़े पन को मानसिक मंदता एवं शैक्षिक आधार पर पिछड़े पन को शैक्षिक मन्दता कहते हैं।

बर्ट → "पिछड़ा बालक वह है, जो अपने विद्यालयी जीवन के बीच अपने आयु के समकक्ष से निचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो"

बर्टन हाल —
"सामान्यतया पिछड़े बालक वे होते हैं जिनकी शैक्षिक उपलब्धि उनकी स्वाभाविक योग्यताओं से कम होती है"

पिछड़े पन के प्रकार —

सामान्य पिछड़ा पन —
यदि बालक अपने पाठ्यक्रम के सभी विषयों में कमजोर है।

विशिष्ट पिछड़ा पन —
यदि बालक अपने पाठ्यक्रम के एक या दो विषयों में कमजोर होता है तो उसे विशिष्ट पिछड़ा पन कहते हैं। इसलिए पिछड़े पन का उपचार किया जा सकता है